International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-1 January – 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों में उपलब्ध आख्यानों का सामान्य सर्वेक्षण एवं वर्गीकरण

Dr. Nand Kishor

Lecturer Janta inter college sirsiya no. 2

Post vijayikaf District Kushinagar

सार

यह शोध प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों में उपलब्ध आख्यानों का सामान्य सर्वेक्षण एवं वर्गीकरण पर आधरित है जिसका विश्लेषण हमने ब्राह्मण ग्रन्थों का परिचय और ब्राह्मणों में विधि का विधान भी सयुक्तिक है। वैदिक संहिताओं के स्वरूप तथा प्रतिपाद्य विषय से ब्राह्मण ग्रन्थों का स्वरूप और प्रतिपाद्य विषय सर्वथा भिन्न है। वैदिक संहितायें जहाँ पद्य–गद्य–गानात्मक स्वरूप वाली तथा देवस्तुतिप्रधान हैं, वहीं ब्राह्मण ग्रन्थ एकमात्र गद्यात्मकशैली में रचे गये हैं

मुख्य शब्द : आख्यान, ब्राह्मण ग्रन्थ.

प्रस्तावना

ब्राह्मण ग्रन्थ भारतीय परंपरा मन्त्र और ब्राह्मण दोनों को वेद कहती है (मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्), किन्तु, आधुनिक विचारक वेद से केवल संहिता–भाग का ही ग्रहण करते हैं। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मन् से बना है, जिसका अर्थ हैकृ वेद (ब्रह्म) से सम्बद्ध। अत: वेदों की शाखाओं की व्याख्या करने के लिए पृथक–पृथक् ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गए। यद्यपि इनका स्वरूप मूलत: धार्मिक है, पर राजनीतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विषयों का भी इनमें समावेश है। ये सभी विषय मन्त्रों की व्याख्या से ही जोड़े गए हैं। वैदिक कर्मकाण्ड का विकास इन्हीं ग्रन्थों से जाना जा सकता है। इनके अतिरिक्त सृष्टि से सम्बद्ध पौराणिक कथाएँ भी ब्राह्मणों में आई हैं। वस्तुतरू वैदिक संहिताओं के प्रतीकात्मक अर्थों को ब्राह्मणों में विस्तार दिया गया है। इनमें मत्स्य द्वारा सृष्टि की रक्षा, शुनरूशेप की बलि दिए जाने से रक्षा इत्यादि कथाएँ हैं। यहाँ प्रत्येक याज्ञिक विधान से कोई न कोई आख्यान जोड़ दिया गया है।

ऋग्वेद–संहिता से सम्बद्ध दो ब्राह्मण–ग्रन्थ हैंकृ ऐतरेय और कौषीतकि। पहले में 40 और दूसरे में 30 अध्याय हैं। दोनों में विषयवस्तु की बहुत समानता है। इनमें सोमयाग, अग्निहोत्र, राजसूय, राज्याभिषेक इत्यादि का विवरण दिया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण ऐतरेय महीदास की रचना है, जबकि कहोड़ कौषीतकि ने कौषीतकि ब्राह्मण की रचना की। इन दोनों में सरल गद्य का प्रयोग है।

शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के ब्राह्मण ग्रन्थों का नाम शतपथ है, किन्तु दोनों शाखाओं के शतपथ ब्राह्मण पृथक–पृथक् हैं। इनमें अध्यायों की योजना में अन्तर है। माध्यन्दिन शतपथ में 14 काण्ड तथा 100 अध्याय हैं, जबकि काण्व शाखा के शतपथ में 104 अध्याय तथा 17 काण्ड हैं। शतपथ ब्राह्मण ऋग्वेद के बाद वैदिक साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ है। इसमें दर्शपूर्णमास, पितृयज्ञ (श्राद्ध), उपनयन, स्वाध्याय, अश्वमेध, सर्वमेध इत्यादि का वर्णन है। पूरे ब्राह्मण–ग्रन्थ में याज्ञवल्क्य को प्रामाणिक माना गया है, क्योंकि इसी ऋषि ने सूर्य की उपासना करके शुक्लयजुर्वेद की प्राप्ति की थी। अग्नि–चयन वाले अध्याय में शाण्डिल्य ऋषि को प्रामाणिक माना गया है। बृहदारण्यक उपनिषद् इसी

ब्राह्मण का अन्तिम भाग है।

कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध तैत्तिरीय ब्राह्मण है, जो वास्तव में तैत्तिरीय संहिता का ही परिशिष्ट है। संहिता में कुछ अनुक्त विषय रह गए थे जिनकी पूर्ति इस ब्राह्मण में हुई है। इस वेद की अन्य संहिताओं (काठक, मैत्रायणी आदि) में तो ब्राह्मण ग्रन्थ अंग रूप से ही मिले हुए हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन अष्टक या काण्ड हैं, जिनमें अग्न्याधान, गवामयन, सौत्रामणि इत्यादि यज्ञों का वर्णन है।

सामवेद से सम्बद्ध कई ब्राह्मण हैं, जैसेकृ ताण्ड्य (पञ्चविंश), षड्विंश, जैमिनीय इत्यादि। ताण्ड्य ब्राह्मण में प्राचीन दन्तकथाओं के साथ व्रात्यों (आर्य जाति से बहिष्कृत वर्ग) के पुनरू वर्णप्रवेश का वर्णन है। षड्विंश ब्राह्मण में चमत्कार और शकुन से सम्बद्ध अद्भुत ब्राह्मण नामक एक अध्याय है। जैमिनीय ब्राह्मण में तीन भाग हैं तथा यह शतपथ के समान महत्त्वपूर्ण है। इसमें विज्ञान की भी सामग्री मिलती है। इनके अतिरिक्त सामवेद से सम्बद्ध दैवत, आर्षेय, सामविधान, वंश, छान्दोग्य, संहितोपनिषद् इत्यादि कई ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। अथर्ववेद से सम्बद्ध एक गोपथ ब्राह्मण मिलता है, जिसमें दो भाग हैं पूर्व गोपथ और उत्तर गोपथा इसमें सृष्टि, ब्रह्मा, ब्रह्मचर्य, गायत्री आदि की महिमा का वर्णन है। इसमें ओंकार के साथ त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) का भी उल्लेख है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में सांस्कृतिक तत्त्वों का बीज भी प्राप्त होता है, जैसेकृसृष्टि की व्याख्या, वर्णाश्रम–धर्म, स्त्री–महिमा, अतिथि–सत्कार, यज्ञ का महत्त्व, सदाचार, विद्यावंश इत्यादि।

ब्राह्मण ग्रन्थों का स्वरूप

वैदिक संहिताओं के स्वरूप तथा प्रतिपाद्य विषय से ब्राह्मण ग्रन्थों का स्वरूप और प्रतिपाद्य विषय सर्वथा भिन्न है। वैदिक संहितायें जहाँ पद्य–गद्य–गानात्मक स्वरूप वाली तथा देवस्तुतिप्रधान हैं, वहीं ब्राह्मण ग्रन्थ एकमात्र गद्यात्मकशैली में रचे गये हैं तथा उनका मुख्य प्रतिपाद्य विषय है– 'यज्ञों की सर्वाङ्गपूर्ण मीमांसा।' ब्राह्मणों में इस प्रतिपाद्य–विषय के प्रतिपादन तथा प्रतिष्ठा के दो मूलाधार हैं– 1. विधि, 2. अर्थवाद।

इनमें 'विधि से अभिप्राय है–'यज्ञ तथा उसके अङ्गोपाङ्गों के अनुष्ठान का उपदेश ।श ये विधियाँ ही ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रधान विषय हैं। शबरस्वामी ने विधियों के दश प्रकारों का निर्देश किया है

हेतुर्निवचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः ।

परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण–कल्पना ।। (शा.भा. 2.1.8)

विधियों के इन दश प्रकारों में भी प्रधानता षविधिश की ही है, शेष (अन्य) जितने भी अवान्तर विषय हैं, वे सभी वस्तुतः विधि के ही पोषक हैं। इन अवान्तर विषयों को ही मीमांसकों ने 'अर्थवाद' कहा है। विधि का ही स्तुति तथा निन्दारूप में पोषण या निर्वहन करना ही 'अर्थवाद' है– "विहितार्थे प्ररोचना निषिद्धकार्ये निवर्तना अर्थवादः। इस प्रकार शविधि तथा 'अर्थवाद' में अङ्गाङ्गिभाव (पोष्यपोषक भाव) सम्बन्ध है।

ब्राह्मणों में विधि का विधान भी सयुक्तिक है। प्रत्येक विधि के मूल में कोई न कोई ष्हेतुश है। अतः उन हेतुओं का निर्देश करना ब्राह्मण का कार्य है। विधि–विधान में किसी मन्त्र का प्रयोग किस उद्देश्य के लिये किया गया है? इसकी भी सयुक्तिक (विनियोगपूर्वक) व्यवस्था भी ब्राह्मण ग्रन्थों में की गयी है।

साथ ही स्थान–स्थान पर अनुष्ठेय वस्तुओं (विधियों) की पुष्टि हेतु विविध प्राचीन ऐतिहासिक आख्यान भी दिये गये हैं, जिससे याज्ञिकों की यागों में श्रद्धा उत्पन्न हो। इसी प्रकार निर्वचन या निरुक्त का उदय भी इन्हीं विधियों में प्रयुक्त शब्दविशेष की व्युत्पत्ति दिखाने से होता है। अतः ब्राह्मणों में विधिश को केन्द्र में रखकर ही निरुक्ति, स्तुति–निन्दारूप–अर्थवाद, आख्यान, हेतु, वचनादि विविध विषय अपना आवर्तन पूरा करके ब्राह्मणों को सम्पूर्ण कलेवर प्रदान करते हैं। विषय विवेचन की दृष्टि से ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रधानतः सात बिन्दु (विभाग/अंश) हैं–(1) विधि, (2) विनियोग, (3) हेतु, (4) अर्थवाद, (5) निर्वचन, (6) आख्यान, (7) उपनिषद् ।।

विधि – 'विधि' का अभिप्राय है– यज्ञों के साङ्गोपाङ्ग अनुष्ठान विधियों का उपदेश अर्थात् यज्ञों का अनुष्ठान कब, कहाँ, कैसे और किसके द्वारा होना चाहिये? यह सब कर्मकाण्डसम्बन्धी विधान विधि भाग से सम्बद्ध है। इन सबका उपदेश ब्राह्मणों में किया गया है। उदाहरणार्थ– ताण्ड्य ब्राह्मण (6/7) में अनेक विधियाँ उपलब्ध होती हैं। वहाँ श्बहिष पवमान के लिये अध्वर्य तथा उदगाता आदि पाँच ऋत्विजों के प्रसर्पण का विधान किया गया है इसके लिये तीन नियमों का पालन अत्यावश्यक है– (1) प्रसर्पण के समय ऋत्विजों का धीरे–धीरे पदन्यास, (2) मौन रहना, (3) प्रसर्पण करते समय ऋत्विजों का एक विशेष क्रम में पक्तिबद्ध होकर सञ्चरण करना। अन्यथा (पङ्क्ति टूटने पर) हानि तथा अनर्थ की सम्भावना होती है। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण तो विधि–विधानों की विपुल राशि का भण्डार है। शतपथ ब्राह्मण की आरम्भिक कण्डिका में ही सहेतुक विधि का निर्देश मिलता है। पौर्णमास इष्टि में दीक्षित होने वाला व्यक्ति आहवनीय और गार्हपत्य अग्नियों के बीच पूरब की ओर खड़ा होकर जल स्पर्श करता है। जलस्पर्श क्यों? जल मेध्य होता है अर्थात् वह यज्ञ के लिये उपयोगी होता है। झूठ बोलने वाला व्यक्ति यज्ञ करने के लिये उपयुक्त नहीं होता। अतः जल का स्पर्श करने से वह पापों को दूर कर मेध्य (पवित्र) बन जाता है तथा पवित्र होकरदीक्षित हो जाता है।

विनियोग – ब्राह्मण ग्रन्थों में "किस मन्त्र का प्रयोग किस उददेश्य की सिद्धि केलिये किया जाता है?" इसकी भी सयुक्तिक व्यवस्था सर्वत्र की गयी है। मन्त्र के अन्तरङ्ग अर्थ से अपरिचित पाठक की मन्त्र के विनियोग को लेकर अश्रद्धा हो सकती है। अतः ब्राह्मणों में मन्त्रों के विनियोग की युक्तिमत्ता सिद्ध की गयी है। ब्राह्मणों में प्रायः मन्त्र के पदों से ही युक्तिमत्ता सिद्ध हो जाती है, जैसे–श्स नः पवस्व शं गवे' (_.9.11.3) ऋचा का गायन पशुओं की रोगनिवृत्ति के लिये किया जाता है। इसकी सिद्धि मन्त्र के पदों से ही हो जाती है परन्तु कुछ स्थितियों में मन्त्र के विनियोग की युक्तिमत्ता को सिद्ध करना होता है। ब्राह्मणों में ऐसे भी अनेक स्थल हैं, जैसे–'आ नो मन्त्रवरुणा' (_.3.62.16) मन्त्र के गायन का विनियोग दीर्घरोगी की रोगनिवत्ति के लिये है। इस विनियोग की यक्तिमत्ता के विषय में ब्राह्मण का कथन है– मित्रावरुण का सम्बन्ध प्राण तथा अपान से है। दिन के देवता होने से ही मित्र प्राण के प्रतिनिधि हैं तथा रात्रि के देवता होने के कारण वरुण अपान के प्रतीक हैं। अतः दीर्घरोगी के शरीर में मित्रावरुण के रहने की प्रार्थना अन्ततः प्राण तथा अपान को धारण करने का प्रकारान्तर से सकेत है। फलतः इस मन्त्र का पूर्वोक्त विनियोग युक्ति सङ्गत है। इस प्रकार मन्त्रों की विनियोगपरक व्याख्या करना भी ब्राह्मण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य रहा है।

हेतु – ब्राह्मण ग्रन्थों में विविध विधियों की पृष्ठभूमि में निहित कारणों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है, उदाहरणार्थ–अग्निष्टोम याग में 'उद्गाता' ––– 'सदस' नामक मण्डप में औदुम्बर वृक्ष की शाखा का उच्छ्रयण करता है। औदुम्बरवृक्ष की ही शाखा क्यों? तैत्तिरीय ब्राह्मण सकारण इसकी युक्तियुक्तता को स्पष्ट करता है– प्रजापति ने देवताओं के लिये ऊर्ज का विभाग किया था। उसी से उदुम्बर वृक्ष की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार उदुम्बर वृक्ष का देवता प्रजापति है। उद्गाता का सम्बन्ध भी प्रजापति से है। अतः उद्गाता उदुम्बर की शाखा का उच्छ्रयण अपने प्रथम कर्म से करता है। ब्राह्मणों में

प्रतिपादित ये हेतुवचन यागविधियों में श्रद्धा उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

अर्थवाद – ब्राह्मणों में यज्ञादि में समधिक महत्त्वशाली विधि की प्रशंसा (स्तुति) तथा निषिद्ध पदार्थों की निन्दा के अनेक प्रसङग हैं। यही अर्थवाद कहलाते हैं। अर्थवाद का प्रयोग विधि की आस्थापूर्वक पुष्टि के लिये ब्राह्मणों में किया गया है। जैमिनी ने अर्थवाद के प्रधानतः तीन भेद किये हैं– 1. गुणवाद, 2. अनुवाद, 3. भूतार्थानुवाद। इनमें भूतार्थानुवाद के पुनः सात भेद किये हैं– स्तुत्यर्थवाद, फलार्थवाद, सिद्धार्थवाद, निरर्थवाद, परकृति, पुराकल्प और मन्त्र। इस प्रकार निन्दा, स्तुति, हेतु, निर्वचन, विनियोग आख्यानादि अर्थवाद में ही समाहित हो जाते

निर्वचन (निरुक्ति) – ब्राह्मण ग्रन्थों में शब्दों के निर्वचन (व्युत्पत्ति) का भी स्थान–स्थान पर निर्देश किया गया है। इन निर्वचनों के माध्यम से याग में प्रयोज्य पदार्थ की सार्थकता को निरूपित किया गया है। जैसे–'बृहत्साम' पद के अर्थ की सार्थकता को निरुक्त के माध्यम से ताण्ड्य ब्राह्मण में स्पष्ट किया गया है–'ततो बृहदनु प्राजायत। बृहन् मर्या इदं स ज्योगन्तरभूदिति तद् बृहतो बृहत्त्वम।' (ताण्ड्य ब्रा. 7.6.5) अर्थात् इस साम का श्बृहत्सामश नामकरण इसलिये है, क्योंकि इस साम ने प्रजापति के मन में बृहत्काल तक निवास किया था। ब्राह्मणों में निर्दिष्ट ये निर्वचन भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। ये ही कालान्तर में निरुक्त के आधार भी बने।

आख्यान – ब्राह्मण ग्रन्थों में विधि की सयुक्तता को प्रदर्शित करने के लिये विविध रोचक आख्यानों का भी उल्लेख किया गया है। ब्राह्मणों में वर्णित ये आख्यान दो प्रकार के हैं– 1. स्वल्पकाय, 2. दीर्घकाय। इनमें प्रथम प्रकार के आख्यानों में उन कथाओं की गणना है, जो सद्यः एव विधि की सयुक्तिकता को प्रमाणित करते हैं। ऐसे आख्यानों में प्रमुख हैं– वाक् का देवों का परित्याग कर जल और अनन्तर वनस्पति में प्रवेश सम्बन्धी आख्यान। इन लघु आख्यानों में कहीं–कहीं गम्भीर तात्त्विक विषयों का भी सकेत मिलता है, जैसे– शतपथ ब्राह्मण में वाणी तथा मन में से मन की श्रेष्ठता प्रतिपादनविषयक आख्यान (शत. ब्रा. 1.4.5.8 –12)। दीर्घ आख्यानों में शुनःशेप आख्यान, पुरुरवा–उर्वशी आख्यान, मनु के द्वारा जलप्लावन के अनन्तर सृष्टि के पुनरारम्भ सम्बन्धी आख्यान। ये आख्यान ब्राह्मणों के नीरस विषयों के मध्य रोचकता का आधान करते हैं।

उपनिषद् – ब्राह्मणों का उपनिषद् भाग ब्रह्मतत्त्व पर अपनी गहन विवेचना प्रस्तुत करता है।

उद्देश्य

1. ब्राह्मण ग्रन्थों का स्वरूप का अध्ययन करना।
2. आख्यानों का वर्गीकरण का अध्ययन करना।

आख्यानों का वर्गीकरण

ब्राह्मण ग्रन्थों में मुख्य रूप से श्रौतयागों एवं ऋतिकों के कर्मों का प्रतिपादन हुआ है । धार्मिक कृत्यों एवं यज्ञ विधि के ज्ञान हेतु अनेक आख्यान वर्णित हैं। ब्राह्मणगत आख्यानों का वर्गीकरण निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

देवता सम्बन्धी आख्यान

ब्राह्मण ग्रन्थों में देवताओं से सम्बद्ध सर्वाधिक आख्यान उपलब्ध हैं । ये देवासुर संग्राम, सृष्टि उत्पत्ति, इन्द्र और वृत्र–वध सम्बन्धित हैं। सृष्टि उत्पत्ति से सम्बद्ध अधिकांश आख्यानों में प्रजापति देवता का उल्लेख प्राप्त होता है। ऐतरेय ब्राह्मण में प्रजापति देवता द्वारा वैवस्वत मनु की प्रजा उत्पत्ति, 1 प्रजापति द्वारा दुहिता से समागम और मनुष्य की सृष्टि ? जातवेदश् अग्नि द्वारा प्राणियों को लौटाना, प्रजापति द्वारा सन्तानोत्पत्ति की अभिलाषाश अन्तरिक्ष, द्यौ, पृथ्वी एवं तीनों वेद तथा ओंकार की उत्पत्ति से सम्बधित आख्यानों का वर्णन है। ताण्ड्य में प्रजापति के तर्तद अंग विशेष से वर्णों तथा देवताओं की उत्पत्ति वर्णित है। प्रजापति के संचित वीर्य से आदित्य भृगु आङ्गिरस बारहसिंहे, भैसों, हरिणों, ऊँटों आदि अन्य पशुओं की उत्पत्ति आदि का उल्लेख है ।

ब्राह्मण ग्रन्थों में कुछ आख्यान देवता और यज्ञ से विशेष रूप से जुड़ी हैं। देवताओं ने यज्ञादि विविध कर्मकाण्डीय क्रिया कलापों द्वारा स्वर्ग पर विजय प्राप्त की।यज्ञ की सम्पन्नता के लिए देवताओं को असुरों से युद्ध करना पड़ा। ऐतरेय,' शतपथ, तथा ताण्डयश में विभिन्न स्थलों पर देवताओं और असुरों का यज्ञ हेतु युद्ध वर्णित है। देवासुर संग्राम से सम्बन्धित आख्यानों के अनुसार यज्ञादि कार्यों में बाधा पहुँचाना ही असुरों का प्रमुख कार्य था, जबकि देव और असुर दोनों ही प्रजापति की सन्तानें हैं ।

निरूक्ति के अनुसार देवों की उत्पत्ति प्रजापति के मुख से तथा असुरों की उत्पत्ति अवाङ प्राणों से हुई ।' ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित देवासुर स्पर्धा से स्पष्ट है कि असुर सदा आक्रमक प्रवृत्ति के रहे तथा देवों ने रक्षात्मक प्रयास हेतु युद्ध किया असुरों का चरित्र भौतिकवादी एवं भोगवादी था। इसके विपरीत देवताओं में दूरदर्शिता एवं परोपकार की भावना निहित थी। अतः देवताओं से सम्बन्धित प्रमुख अख्यान इस प्रकार हैं।गोपथ ब्राह्मण में ब्रह्मा, प्रजापति, अग्नि, वायु, आदित्य, पृथिवी, सूर्य, विष्णु, अदिति, इन्द्र, सोम, रूद्र, बृहस्पति, द्यावापृथिवी, सरस्वती, त्वष्टा, विश्वेदेवा, मित्रावरूण आदि देवताओं 2 के नाम आये हैं, जिनका पृथक परिचय इस प्रकार है

द्रव्य सम्बन्धी आख्यान

ब्राह्मण ग्रन्थों में देवतापरक आख्यानों की अपेक्षाकृति द्रव्य सम्बन्धी आख्यान अल्प हैं । देवताओं को प्रसन्न करने के लिए हविष् के रूप में द्रव्यों का प्रक्षेपण किया जाता था । द्रव्यों में यव–ब्रीहि आदि विभिन्न प्रकार के अन्न, घृत, दधि दुग्ध, सोमयज्ञ, चरू, पुरोडाशादि सम्मिलित हैं । ऐतरेय ब्राह्मण में पयस्याश नामक पदार्थ से सम्बन्धित आख्यान का उल्लेख हुआ है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में पिसा हुआ यव, घृत, दूध, लाजा (खील) इन चारों द्रव्यों से युक्त हवि को अश्विन आदि देवता को प्रदान करना, यह वर्णन एक आख्यान में निहित है। पशु पुरोडास, अग्नेय पुरोडास अग्निषोमीय एकादश कपालश से सम्बन्ध आख्यानों में द्रव्य की महत्ता का उल्लेख है। सोमरस के पान हेतु देवताओं में परस्पर स्पर्धा व्याप्त थी । इससे सम्बन्धित आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण में उद्दधृत है जिसमें सोमपान के लिए देवताओं के क्रम का उल्लेख हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में वर्णित चातुर्मास्य यज्ञ में दूध रूप अन्न की महिमा का प्रकाशन यव की महिमा तथा इन्द्र का अति सोमपान एवं अश्विानों का भैषज्य आख्यानों में ही दृ ष्टिगोचर होता है ।

याग कृत्यों से सम्बन्धित आख्यान

यज्ञ के विभिन्न अङ्गों एवं उपाङ्गों का वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्यत्र दुर्लभ है । यज्ञीय क्रिया कलापों का प्रेरक तत्त्व मुख्य रूप से आख्यान ही हैं । इन्हीं के द्वारा यज्ञ क्रिया स्पष्ट होती है। अग्निष्टोम का वैशिष्टयश उक्थ्य विधान षोडशी क्रतु विधान का पहला विस्तार करने वाला पहला व्यक्ति है ताण्डय ब्राह्मण में च्यावन भार्गव तथा सुकन्या से सम्बंधित आख्यान में प्राचीनता की झलक मिलती है जिसमे आदर्श भारतीय नारी चरित्र का उज्जवल भाव दर्ष्टिगोचर होता है

निर्वचन से सम्बन्धित आख्यान

ब्राह्मण ग्रन्थों में अन्य विषयों की अपेक्षा निर्वचनात्मक आख्यान अधिक मात्रा में हैं । यद्यपि निर्वचन में धातु तथा क्रिया के अर्थ से ही निहितार्थ स्पष्ट होता है तथापि सम्पूर्ण निर्वचनों पर यज्ञ की छाप है । निर्वचनों की प्रमुख विशेषता है दृ आख्यानपरक होना । इसमें प्रस्तुत पद की निरुक्ति का संकेत आख्यान द्वारा प्रमाणिक किसी कर्म विशेष को इंगित करने वाले क्रिया पद के अन्तर्गत उपलब्ध होता है अग्निष्टोम, आग्नीध्र, आज्य, आश्विन, इष्टि, आहुति, चतुष्टोम, जातवेद, तनूनपात, विविद पुरोडाश, शक्वरी, सामनश आदि शब्दों से सम्बन्धित निर्वचनात्मक आख्यान ब्राह्मण ग्रन्थों में उद्धृत हैं । वैरूप भी एक साम है । इस शब्द की उत्पत्ति हेतु ब्राह्मणकार ने आख्यान को प्रस्तुत किया है थ्ऐसा उदाहरण ताण्ड्य ब्राह्मण में –– उल्लिखित है ।

छन्द से सम्बन्धित आख्यान

यज्ञों के विभिन्न क्रिया कलापों में छन्दों का वर्णन महत्त्वपूर्ण है । ब्राह्मणकार के अनुसार छन्द चेतना शक्ति सम्पन्न माने गये हैं । छन्द यज्ञ का एक आवश्यक अंग है । छन्दों को देविका या छोटे देवता कहा गया है। ब्राह्मणकार ने छन्दों में रस की निष्पत्ति की है । इस तथ्य से सम्बन्धित आख्यान दृष्टव्य है । षडह यज्ञ के छठे दिन छन्दों से रस प्रवाहित होने लगा। प्रजापति को भय हुआ कि रस लोक में न फैल जाय। उसने छन्दों ––– को अन्य स्थान पर स्थापित करके रस को दबा दिया। उसने विभिन्न ऋचाओं से रस को अवरुद्ध किया। सोम को लाने के लिए छन्दों ने पक्षी का रूप धारण किया । यह आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण में सौपर्णाख्यान नाम से प्रसिद्ध है। शतपथ ब्राह्मण में छन्द ने देवासुर संग्राम में देवों का पक्ष लेकर उनको विजय बनाया। इन्द्र वृत्र पर वज़ गिराकर छिप गया । उसको अग्नि और वृहती खोलने हेतु निकले। छन्दोपरक आख्यानों पर दृष्टिपात करने से यह प्रतीत होता है कि छन्दों के विविध कार्य है, जैसे – संरक्षण देवों और मनुष्यों का उन्नयन, कामनाओं का वर्णन आदि " अनुष्टुभ की महत्त्वाकांक्षा के विषय में ऐतरेय ब्राह्मण में आख्यान उद्धृत है।

इतिवृत्तात्मक आख्यान

ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित श्रौतपरक आख्यानों में कुछ ऐतिहासिक आख्यान का भी समावेश है । ये प्रचीन इतिहास को प्रतिबिम्बित करते हैं । इन आख्यानों में दो प्रकार के आख्यान हैं – प्रथम ऋषि से सम्बद्ध, द्वितीय यज्ञ के परिपोषक राजाओं से सम्बद्ध व ऋषियों से सम्बन्धित आख्यान में भृगु ऋषि का अपने को पिता से श्रेष्ठ समझना, अंगिरा द्वारा कृत्य में भूल, नाना नेदिष्ट द्वारा भूल सुधार रू ऋभुओं द्वारा तप करके सोमपान से अधिकार की प्राप्ति आदि ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित हैं। ताण्ड्य ब्राह्मण में जानस्य के पुत्र ऋषि ने सर्वकामना प्राप्ति हेतु स्तुति करना शिशु नाम अङ्गिरस से युक्त, वशिष्ठ ऋषि से सम्बन्धित आख्यान दृष्टिगोचर होते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित एतेश प्रलाप इसी आख्यान के अन्तर्गत आते हैं। इन आख्यानों में यज्ञ कर्म अवश्यमेव निहित है। यज्ञ के प्रति पोषक राजाओं से सम्बन्धित आख्यानों में इन्द्र का महाभिषेक राजसूय यज्ञ आदि का वर्णन है । केशिन राजा से सम्बन्धित आख्यान इसी श्रेणी में आते हैं। इसका उल्लेख ऐतरेय श तथा शतपथ रू दोनों ब्राह्मणों में मिलता है ।

कल्पनात्मक आख्यान

कल्पना मिश्रित आख्यान भी ब्राह्मण ग्रन्थों पाये जाते हैं । कल्पना का आश्रय तथ्य को स्पष्ट करने के लिए लिया गया है यथा–शतपथ ब्राह्मण में उपांशु हवियों के समर्थन में मन एवं वाणी का तर्क–वितर्क कल्पना मूलक है ।श कल्पनापरक आख्यानों में बौद्धिक प्रयासों के साथ – साथ भाषा सौन्दर्य का भी समावेश होने के कारण रुचिकर एवं श्रेष्ठ हैं ।

व्याख्यात्मक आख्यान

विशद व्याख्या तथा मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए व्याख्यात्मक आख्यानों का आश्रय ब्राह्मण ग्रन्थों में लिया गया है। शतपथ ब्राह्मण में वर्णित पुरूरवा–उर्वर्शी ' प्राचीन जलौध का इतिहास तथा ऐतरेय ब्राह्मण में शुनः शेपश का व्याख्यात्मक वर्णन है । 10.नीति सम्बन्धी आख्यान ब्राह्मण ग्रन्थों में कुछ आख्यान नीतिपरक भी हैं जिनमें लौकिक एवं राजनैतिक प्रज्ञा के दर्शन शुलभ होते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में ऐसे ही आख्यानों का वर्णन है इसमें मूलतः उद्देश्य यज्ञ विधान की पुष्टि है।तथापि राजनीति तथा लौकिक प्रजा की झलक मिलती है । येन केन प्रकारेण अपना स्वार्थ पूरा करने का उद्देश्य ही इस आख्यान में निहित है शतपथ ब्राह्मण के आख्यान में नीति तत्त्व के संकेत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं जो नैतिकता के मानदण्ड को प्रदर्शित करते हैं। शरणागत की रक्षा करना, संगठन में शक्ति, लड़ाई झगड़ा हो जाने पर प्रायश्चित करना, अनिंद्य तथा सज्जनों के कार्य को इनकार न करना अहंकारी का पतन अनिवार्य, चक्र में चलते रहने की जीत 10 असत्य से तात्कालिक समृद्धि होती है किन्तु सत्य की विजय अंत में निश्चित" सत्य बोलना.12 श्रम, तप तथा श्रद्धा से सब कुछ जीतनाश आदि शिक्षाएँ नीतिपरक आख्यानों में ही उपलब्ध है।

ब्राह्मणों ग्रन्थों का महत्त्व

वैदिक वाङ्मय में ब्राह्मण ग्रन्थों का कितना महत्त्व है? इसे कुछ बिन्दुओं से समझ सकते हैं

1. वैदिक संहिताओं में मन्त्रों का सकलन है जिनका यागानष्ठानों में विनियोगकिया जाता है। किस यज्ञविशेष में किस मन्त्र का विनियोग किया जाना है? किस प्रयोजन विशेष की सिद्धि के लिये कौन सा मन्त्र विहित है? इसका उत्तरब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है।

2. ब्राह्मणों में यज्ञों को सर्वोपरि कर्म कहा है–'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म । 'यज्ञ' मानवजाति के लिये किस प्रकार उपयोगी है? यज्ञ क्यों श्रेष्ठ कहे गये हैं? इसका समाधान ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है कि यज्ञों से मनुष्य का वैयक्तिक उत्थान होता है। उसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। बार–बार मृत्यु से छूटना ही मुक्ति है–श्सर्वस्मात् पापात्मनो निर्मुच्यते य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति।' ब्राह्मण–ग्रन्थ वेदों का व्याख्यान रूप हैं। अतः उनमें वैदिक मन्त्रों से सम्बद्ध अनसुलझे प्रश्नों तथा रहस्यों का भी समाधान तथा उत्तर मिलता है, उदाहरणार्थ– वेदों में विविध लोकों से सम्बद्ध देवताओं की स्तुतियाँ हैं, किन्तु कितने लोकदेवता हैं? इसका उत्तर ब्राह्मण देता है कि तीन लोक हैं–'त्रयो वा इमे लोकाः' ये तीन लोक कौन–कौन से हैं? ब्राह्मण बताते हैं– पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा धुलोक, श्पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौः ।

3. ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था से सम्बन्धित सभी कर्तव्याकर्तव्यों का निर्देश किया गया है, जैसे– ब्राह्मणों का शस्त्र यज्ञ है, एतानि वै ब्राह्मणायुधानि यद्यज्ञायुधानि (सं. 7. 19)। क्षत्रियों का बल युद्ध है, (शत. ब्रा. 13.1.5.6)। वैश्य तो साक्षात् राष्ट्र है क्योंकि उसके धन कमाने पर ही चारों वर्णों का कार्य चलता है। शूद्र का कार्य श्रम है (शत. ब्रा. 13.6.10)। इस प्रकार धर्मशास्त्रों का पूर्वसूत्र ब्राह्मणों में मिलता है।

4. वैज्ञानिक तथा आयुर्वेद की दृष्टि से भी ब्राह्मण ग्रन्थों का चिन्तन महत्त्वपूर्ण है,जिनका समर्थन अद्यावधि किसी न किसी रूप में होता आ रहा है, जैसे– ऋतुओं के सन्धिकाल को व्याधि का कारण ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा गया है –'ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायन्तेश (गो.ब्रा.1.19) रोग के कीटाणुओं को अग्नि भस्मसात् करती है–'अग्निर्हि रक्षसामपहन्ताश (शत.ब्रा.1.2.1.6)द्य अग्नि का

सार सुवर्ण है। अतः आर्य सुवर्ण आभूषण धारण करते थे।) ब्राह्मण ग्रन्थों का रेखागणितीय महत्त्व भी है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वेदियों तक चित्तियां बनाने का विधान है। ये विधान रेखागणित का जनक है। दो अश्र, चार अश्र, द्रोणाकार, वाली वेदियों तथा चित्तियों के निर्माण ने ही रेखागणित का रेखाङ्कन किया।

5. ब्राह्मणों में यज्ञकर्म के विधि–विधानों के साथ ही शास्त्रार्थ पद्धति से कर्मफल,पुनर्जन्म, ब्रह्म, लोक–परलोक नाचिकेताग्नि के रहस्य इत्यादि गम्भीर विषयों का भी उपबृंहण किया गया है जिसका प्रतिफलन हमें कालान्तर में उपनिषद् तथा षड्दर्शनों के रूप में प्राप्त होता है। अतः उपनिषदादि के गम्भीर विषयों का ज्ञानप्राप्त करने के लिये भी ब्राह्मणों का अध्ययन अनिवार्य है।

6. ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी ब्राह्मण नितान्त उपयोगीहै। ब्राह्मण ग्रन्थों के विविध आख्यान जहाँ विविधपुराणों के लिये उपजीव्य सिद्ध होते हैं वहीं ब्राह्मणों में कुरु, पाञ्चाल प्रदेशों सरस्वती नदी के उदगम स्थलादिभौगोलिक परिवेश की भी सूचना मिलती है।

7. भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी ब्राह्मण ग्रन्थ की भाषा संहितायुग तथा उपनिषद् युग(दो युगों) की भाषा के मध्य सेतु का कार्य करती है जिससे भाषा के क्रमिक विकास को जाना जा सकता है। इस प्रकार ब्राह्मण ग्रन्थों का महत्त्व अपरिमित है।

उपसंहार

विशद व्याख्या तथा मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए व्याख्यात्मक आख्यानों का आश्रय ब्राह्मण ग्रन्थों में लिया गया है । अत: वेदों की शाखाओं की व्याख्या करने के लिए पृथक्–पृथक् ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गए। यद्यपि इनका स्वरूप मूलत: धार्मिक है, पर राजनीतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विषयों का भी इनमें समावेश है। ये सभी विषय मन्त्रों की व्याख्या से ही जोड़े गए हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में विधि की सयुक्तता को प्रदर्शित करने के लिये विविध रोचक आख्यानों का भी उल्लेख किया गया है। साथ ही स्थान–स्थान पर अनुष्ठेय वस्तुओं (विधियों) की पुष्टि हेतु विविध प्राचीन ऐतिहासिक आख्यान भी दिये गये हैं।

संदर्भ सूचि :

[1]. बलदेव उपाध्याय, (2019) ‘‘संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास– प्रथम खण्ड (वेद)’’ उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

[2]. वाचस्पति गैरोला (2018) ‘‘संस्कृत साहित्य का इतिहास’’,, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

[3]. आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्रः (2017) ‘‘वैदिकवाङ्मयस्येतिहास’’ चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

[4]. बलदेव उपाध्याय (2015) ‘‘वैदिक साहित्य’’ शारदा संस्थान वाराणसी।

[5]. पं. रामगोविन्द त्रिवेदी (2016) ‘‘वैदिक साहित्य’’, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।

[6]. आचार्य वाचस्पति गैरोला (2018) श्वैदिक साहित्य और संस्कृतिश,, संवर्तिका प्रकाशन, प्रयागराज (इलाहाबाद)

[7]. डॉ० सूर्यकान्त, (2015)"वैदिक धर्म एवं दर्शन "बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,

[8]. कुन्दन लाल शर्मा, (2016)"वैदिक वाड्.मय का वृहद् इतिहास "वैदिक शोध संस्थान, 1985

. कृष्ण कुमार, (2017) "वैदिक साहित्य का इतिहास "मेरठ साहित्य भण्डार, 1981

[9]. डॉ० ओम प्रकाश पाण्डेय, (2018) "वैदिक साहित्य का इतिहास" कानपुर, 1984

[10]. राम गोविन्द त्रिवेदी, "वैदिक साहित्य"वनारस, 1950

[11]. डॉ0 रसिक विहारी जोसी, (2018)वैदिक साहित्य की रूपरेखा कानपुर,

[12]. आचार्य बलदेव उपाध्याय(2019) "वैदिक साहित्य और संस्कृति," वाराणसी,

[13]. डॉ० सूर्यकान्त, (2018)" वैदिक कोश "बनारस, हिन्दू वि0 वि0, 1963

[14]. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार "वैदिक संस्कृति के मूल तत्व", नई दिल्ली 1983

[15]. शिवदत्त शर्मा, (2017) "वैदिक वर्ण व्यवस्था और श्राद्ध" वाराणसी किशोर विद्या निकेतन,

[16]. डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी, (2019)"वैदिक संस्कृति और दर्शन" 1983 इलाहाबाद,

[17]. आचार्य कृष्ण दत्त वाजपेयी (2020)"वैदिक साहित्य संस्कृति", विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली